Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

November -2020

SPECIAL ISSUE- 262 (CCLXII)

INDIAN WOMEN : PRESENT, PAST AND FUTURE

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor
Dr.S.N.Jadhavar
Head, Deptt. of History,
Sham Gadale Art's College,
Dahiphal (Wadmauli)
Tq.KAJJ,.Dist. BEED.

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

21	मराठवाड्यतील दुष्काळी स्थिती व महिलांच्या समस्या — डॉ. जयदीप रामकृष्ण सोळुंके	89
22	भुवनेश्वर उपाध्याय के साहित्य में नारी के विविध स्वर — प्रो.महेबुब मंगरुले	94
23	प्रतिमा इंगोलेंची कथा : स्त्रियांच्या दु:खाची कहाणी — श्री. एम. वाय. पोवार	97
24	हिंदी आदिवासी कविता में अभिव्यक्त आदिवासी स्त्री — डॉ. संजीवकुमार नरवाडे	102
25	कन्नड तालुक्यातील आदिवासी ठाकर स्त्रियांचे सामाजिक जीवन — डॉ.नम्रता दिलीप भोसले	110
26	गौरी देशपांडे यांच्या साहित्यातील स्त्री जाणीवा — डॉ. नवनाथ ज्ञानोबा पवळे	113
27	भारतीय स्वातंत्र्य लढयातील क्रांतीकारी महिलांचे योगदान : — डॉ. किशन केंद्रे	116
28	महानुभाव साहित्याचा स्त्री विषयक दृष्टीकोण — प्रा. डॉ. किरण प्रभाकर वाघमारे	122
29	हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श — प्रा डॉ. कुलकर्णी वनिता बाबुराव	126
30	समाज सुधारकों की भूमिका—महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में — डॉ. अदिती गोस्वामी	129
31	ठुमरी सम्राज्ञी सिद्धेश्वरी देवी — प्रा.संतोष किसनराव खंडारे	133
32	स्वातंत्र्य चळवळीतील स्त्रियांचे योगदान — श्री. सन्मित बाबासाहेब पाटोळे	136
33	नारियों के बदलते आयाम — डॉ. संजय कुमार सिंह	142
34	इतिहासातील कर्तृत्वान स्त्रिया — प्रा.डॉ.संजय काळे / अक्षय काळे	146
35	हिराबाई बडोदेकर यांचे भारतीय शास्त्रीय संगीतात दिलेले योगदान — प्रा.डॉ. सचिन सुरेशराव बंडगर	149
36	स्वातंत्र्य चळवळीतील स्त्रियांचे योगदान - एक अभ्यास — प्रा. संतोष सोमनाथ कपाळे	154
37	स्वातंत्र्यपूर्व हिन्दी साहित्य में स्त्री—विमश्न (महादेवी वर्मा के गद्य—साहित्य के विशेष संदर्भ में) — प्रा. सुरेन्द्रकुमार गिरधारीलाल साहु	156
38	मध्ययुगीन संत स्वियांचा साहित्य आविष्कार -एक शोध — प्रा.डॉ.संपदा कुलकर्णी	162
39	रामकथाओ में नारी — पंखी सेनापति	167
40	गोमंतकीय लोकगीतांतून प्रकट होणारी स्त्री प्रतिमा — प्रा. उगम उमेश परब	170

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) -7.675, Issue NO, 262 (CCLXII)
ISSN : 2278-9308
November, 2020

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श

प्रा डॉ. कुलकर्णी वनिता बाबुराव
हिंदी विभागाध्यक्षा कै रमेश वरपुडकर महाविद्यालय ,सोनपेठ ता. सोनपेठ जि. परभणी
दूरभाष क्र -9423138878

विमर्श का अर्थ है |एक "जीवंत बहस" नारी विमर्श का अर्थ है |समाज में नारी के प्रति जागृति लाना तथा नारी के स्वत्व को अस्तित्व को पहचान दिलाने का प्रयास ही नारी विमर्श कहलाता है || स्त्री विमर्श से यह संकल्पना किसी एक विचारधारा पर आधारित न होकर अनेक विचारधाराओं का समन्वय है || स्त्री विमर्श पुरुषों के विरोध में संघर्ष नहीं है |बल्कि सामाजिक राजनीतिक पारिवारिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्तरों पर स्त्री को कनिष्ठ स्थान दिया जाता है || ,इसे समाप्त करना इसका उद्देश्य है || नारी विमर्श नारी को केंद्र में रखकर उसके लिए मानवीय दृष्टि से सोच का विमर्श है |जहां नारी को भोग्या,कामिनी,ललना,रमणी आदि गवेषणो से अलंकृत किया है |आज ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है |जहां स्त्री ने अपनी छाप ना छोड़ी हो नारी के इसी संघर्ष विद्रोह एवं अस्तित्व का चित्रण स्त्री विमर्श के केंद्र में है || नारी सम्मान भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण नैतिक मूल्य है |नारी जगत की अर्धांगिनी है |वह आधी दुनिया होती है || यह आधी दुनिया ही न्याय एवं सम्मान से अलग रहे तो विकास कैसे होगा नारी एक और आकर्षण का केंद्र है |तो दूसरी ओर शक्ति,संभल और प्रदर्शिका भी है |नारी के प्रति सम्मान भरा दृष्टिकोण मानवता का ही रूप है |उसे सम्मान देना परिवार को सम्मानित करना है |नारी को समर्पण मई पत्नी वात्सल्य भरी माता और ममतामई बहन के रूप में स्वीकार किया गया है |वर्तमान स्थिति में नारी के प्रति रहे नकारात्मक दृष्टिकोण के खिलाफ उसके सम्मान भरे विचारों की सर्जना हुई है |अर्थात चारों और नारियों को लेकर प्रश्न चिन्ह है| इस विषय में गहरा चिंतन मनन समाज से अपेक्षित है ||

महिला लेखिकाओं एवं महिला लेखन का साहित्य में प्रवेश आज के युग में स्त्री के संदर्भ में वैचारिकता को व्यापकता प्रदान करता है | पुरुष रचनाकारों के द्वारा स्त्री के अंतर्मन में प्रवेश, खोज एवं निष्कर्षो का बयान किसी भी रूप में अपूर्ण ही है |इसे नारियोने स्वयं लिखकर पूर्ण किया है |इस दृष्टिकोण के आधार पर कहा जा सकता है |की साहित्य में श्रजन रथ महिलाओं ने अपूर्ण दुनिया को भरा-पूरा खूबसूरत बनाने का सराहनीय कार्य किया है |स्त्र-पुरुष संसार के आधार स्तंभ है |संसार की मानव रुपी सृष्टि इनकी ही देन है |गृहस्ती के शक्ति केंद्र यह दोनों ही है |स्त्री वह शक्तिपुंज है |जिस पर परिवार की न्यू टिकी हुई है |इस सत्य का अनुभव कर भारत के ऋषि यों मनीषियों ने साहित्यकारों आदि ने समाज में स्त्री को उच्च स्थान देने का विधान किया है |जहां नारियों की पूजा की जाती है |वहां देवता निवास करते हैं प्राचीन काल में अनेक विदुषी नारियों ने समाज में पर्याप्त प्रतिष्ठा पाई थी इनमें मैत्रेई,गार्गी,शकुंतला,सीता आदि के नाम प्रातः स्मरणीय बन गए हैं| स्त्री लेखन के संदर्भ में आर शशिधरण ने लिखा है |"महिला लेखन तमाम खूबियों और

खामियों के बावजूद आधी दुनिया को अपनी रचनाओं में बड़ी खूबसूरती के साथ उपस्थित कर गया है |और कर रहा है |लेखिकाओं ने महज स्त्री जीवन पर ही नहीं लिखा है |बल्कि जीवन की तमाम संवेदना ओं की अभूतपूर्व अक्कासी करके कई मायनों में पुरुषों से भी ज्यादा कामयाबी हासिल की है |नारी की कलम से नारी के विषय में जो कुछ लिखा गया है |वह अत्यंत सार्थक और सामाजिक है |महिला लेखन परी व्यक्ति के खुलने और जीवन की तस्वीर के पूरा हो जाने का साक्ष्य है |"1 हिंदी साहित्यकारों ने अपने साहित्य में नारी संबंधी विचार विवेचन स्त्री की व्यथा तथा दशा एवं नारी मुक्ति की अवधारणा को ध्यान में रखकर जो विचार अभिव्यक्त किए हैं वे स्त्री विमर्श के अंतर्गत आते हैं स्त्री विमर्श की मूल अवधारणा यह है |कि स्त्रियों की आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं स्त्री पुरुष समानता नारी मुक्ति आंदोलन व्यक्ति स्वतंत्रता के लिए संघर्ष है |आज के वर्तमान समय में पूरे विश्व में स्त्री विमर्श पर चर्चा हो रही है |"स्त्री विमर्श आज के संदर्भ में ज्वलंत विषय है |, अतः स्त्री विमर्श का अस्तित्वपूर्ण विश्लेषण पुरुष के प्रति द्वेष नहीं है |लड़ाई नहीं है |प्रतिस्पर्धा नहीं है |समानता नहीं है |कंधे से कंधा लगाकर चलने की बात नहीं है |अपितु उसका स्त्रीत्व उसकी व्यक्तिवादी सत्ता का प्रमुख अंश व्यक्तिवादीता को प्राप्त करना चाहिए|"2 हिंदी साहित्य में अनेक रचनाकारों ने स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं का चित्रण किया है |स्त्रियों की समस्याओं का अंकन करते हुए स्त्रियों के उपेक्षित जीवन में परिवर्तन लाने का प्रयास किया है |नारी के संघर्ष विद्रोह एवं अस्तित्व का चित्रण स्त्री विमर्श के केंद्र में है |नासिरा शर्मा का साहित्य स्त्री के इसी यशोगाथा का दस्तावेज है |नासिरा शर्मा द्वारा लिखित कहानियों में स्त्री विमर्श को वाणी मिली है |

नासिरा शर्मा की "दुनिया" इस कहानी की नायिका शोभना आधुनिक जीवन की बर्बरता में वह चुकी है |इसीलिए पिता की मृत्यु होने पर भी वह अपने पिता के घर न जाकर काम में व्यस्त रहती है |उसका पति सुरेश जब उसे व्यवहारी न बनने का उपदेश देता है |तब वह कहती है, "मैंने तो बाबा को नहीं मारा,न उन्हें मारने का षड्यंत्र रचा| आखिर बुढे थे ऊपर से बीमार | उन्हें जाना ही था | एक दिन इसी तरह सबको जाना है | इनमें नई बात क्या है |? मौत सच्चाई है |मगर भी एक कड़वा यथार्थ है |की यह संसार किसी की मौत से रुकता-थमता नहीं है |"3

नासिरा शर्मा की "अपनी कोख" कहानी की साधना भी संघर्ष एवं विद्रोही का परिचय देती है |घर में बेटे के जन्म की उम्मीद सांस लगाकर बैठी है |जबकि साधना घरवालों के विरोध में के बावजूद दूसरी बेटी को जन्म देने का निर्णय लेती है, वह कहती है, "मेरी लड़कियां सिर्फ आंवला दे नहीं मेरा सपना होगी चाहती तो मैं भी बेटा हूं , मगर लड़की की हत्या की कीमत पर नहीं हरगिज़ नहीं |"4 साधना पारिवारिक संघर्ष और विरोध होते हुए भी दूसरी लड़की को जन्म देती है |

मैत्रेयीजी के कथा जगत की नारियां स्वयं ही अपनी लड़ाई लड़ती है |और पुरुष वर्षद वर्चस्व को तोड़ने का प्रयास करती है| "केतकी" कहानी में केतकी की कथा ऐसी स्त्री की कथा है |जो अपने ऊपर हो रहे अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाती है |उसे पता है |कि अन्याय को सहने वाला अन्याय करने वालों से ज्यादा गुनहगार होता है |वह अपने आत्मसम्मान को दांव पर लगाना नहीं चाहती वह कहती है "क्या कोई शौक से पति का घर छोड़ देती है ? माना कि वही घर स्त्री का स्वर्ग है, लेकिन उसके लिए कोई आत्म सम्मान तो

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College Sonpeth Dist. Parbhani
B.Aadhar

खूंटी पर नहीं लगा देता और पति जब स्वयं कहे कि वह ऊब गया है,मुक्ति चाहता है, तब भी क्या उसकी डोरी पकड़कर बैठना श्रेयस्कर है?"5

मैत्रेयी पुष्पा का जन्म सिर्कुरा गांव में हुआ उसका बचपन भी ग्राम जीवन में व्यतीत हुआ है |मैत्रेयी ने ग्रामीण जीवन के पहलुओं को कहानी और उपन्यास के माध्यम से प्रस्तुत किया है |संपूर्ण संसार नारी को वासना के रूप में देखता है | "गोमा हंसती है" कहानी में मैत्रेयी पुष्पा कहती है-"औरत की कमर पर टिकी है |दुनिया की धुरी |"6 मैत्रेई पुष्पा ने झूलानट , चाक ,अल्मा कबूतरी ,विजन, बेतवा बहती रही आदि उपन्यास लिखे हैं अल्मा कबूतरी उपन्यास में नारियों का उज्जवल भविष्य नारी सौंदर्य से जोड़ा है| "उसका भाग्य उसके माथे पर नहीं लिखा, देह की उठान और कटावों पर लिखा है |खूबसूरत शरीर बदसूरत भविष्य गढ़ता है |"7

मृदुला गर्ग का उपन्यास कट गुलाब के नारी पात्र विद्रोह करने वाले हैं उपन्यास के सभी पात्र शिक्षित चिंतनशील बौद्धिक आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी है |उपन्यास में स्त्री-पुरुष संबंधों का चित्रण हुआ है |साथ ही पुरुष द्वारा स्त्री का तिरस्कार शोषण ही प्रमुख रूप से बताया है |शोषण के परिणामस्वरूप स्त्री पुरुष से अलग होकर संघर्ष की राह पर चलती है |असीमा के मन में भी मातृत्व की इच्छा निर्माण हुई थी "क्या औरत मर्द से सिर्फ इसलिए आकर्षित होती है, क्योंकि वह उसे बच्चा दे सकता है |? अगर औरत मर्द के बिना स्पर्मदान द्वारा बच्चा पैदा कर सके तो औरत मर्द के बीच आकर्षण समाप्त हो जाएगा|"8

प्रभा खेतान ने अन्या से अनन्या उपन्यास में प्रभा जी ने स्त्री स्वतंत्रता को लेकर प्रश्न उठाए थे | "मैं व्यक्ति स्वतंत्रता के नाम पर अपने ही टापू पर खड़ी किसी अनजान पुल को खोज रही थी एवं अपने स्त्री अधिकारों की पैरवी कर रही थी|"9

निष्कर्ष:

कुल मिलाकर कहा जा सकता है |कि महिला कथा साहित्य महिला प्रश्नों को उठाता ही नहीं बल्कि महिलाओं को हक दिलाने के पक्ष में भी है |महिला कथा साहित्य में स्त्री जीवन के सभी पहलुओं को उजागर किया है |उन्होंने कहानियों के माध्यम से स्त्री समस्याओं को सामने लाकर उनका समाधान ढूंढने का प्रयास किया है |स्त्री होने के नाते स्त्री की पीड़ा वेदना की सफल अभिव्यक्ति उनके कथा साहित्य में हुई है |

सन्दर्भ :-

1) दसवे दशक के प्रतिनिधि उपन्यास - आर शशिधरण -सं. 2000
२)स्त्री विमर्श : साहित्यिक और व्यावहारिक सन्दर्भ -करुणा उमरे -पृष्ठ क्र 17
3)इंसानी नस्ल -नाशिरा शर्मा -पृष्ठ क्र 96
4) बुतखाना -नाशिरा शर्मा -पृष्ठ क्र 45
5)केतकी -मैत्रियी पुष्पा -पृष्ठ क्र 30
6)गोमा हस्ती है |-मैत्रेयी पुष्पा -पृष्ठ क्र 156
7)अल्मा कबूतरी -मैत्रेयी पुष्पा -पृष्ठ क्र 358
8) कठ गुलाब मृदुला गर्ग -पृष्ठ क्र 179
9)अन्या से अनन्या -प्रभा खेतान पृष्ठ क्र 88

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani